Date
07/05/20

B.Ed - IInd

Sub - "Work Education, Gandhiji's Nai Talim & Community Engagement"

मानववाद और शिक्षा के उद्देश्य :

I. संपूर्ण योग्यताओं और क्षमताओं का विकास ⇒

II. उच्चतम मूल्यों का विकास ⇒

III. मानवीय समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता का विकास ⇒

IV. स्वतंत्र विवेकपूर्ण और संतुलित व्यक्तित्व का विकास ⇒

V. आत्मबोध को जाग्रत करना =

VI. मानसिक एवं बौद्धिक विकास पर बल ⇒

VII. सृजनात्मकता का विकास करना ⇒

VIII. सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास करना =

IX. चारित्रिक एवं नैतिक विकास करना ⇒

X. मानव की पूर्णता एवं श्रेष्ठता का विकास करना ⇒

मानव और पाठ्यक्रम ⇒

1. पाठ्यक्रम के द्वारा मानवीय आकांक्षाओं और लक्ष्यों की पूर्ति होनी चाहिए।
2. पाठ्यक्रम का निर्माण मानवीय विकास की अवस्थाओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।
3. पाठ्यक्रम द्वारा बालक की सृजनात्मक और रचनात्मक शक्तियों का विकास किया जाना चाहिए।
4. बालक की आयु, योग्यता, अधिगम क्षमता और रुचि के अनुरूप होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

5. पाठ्यक्रम में लचीलापन होना चाहिए।
6. पाठ्यक्रम द्वारा बालकों को इनकी तर्क, बुद्धि और विवेक के विकास के लिए अवसर मिलने चाहिए।
7. पाठ्यक्रम में समन्वय और इनकी श्रेष्ठताओं का विकास किया जाना चाहिए।
8. पाठ्यक्रम इन विषयों को - मानविकी विषयों, प्राकृतिक विज्ञान, शारीरिक तथा स्वास्थ्य विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, शिल्प शिक्षा, यौन शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा आदि।

मानववाद और शिक्षण विधियाँ =

1. बालक की योग्यताएँ एवं आवश्यकताएँ =

2. वैज्ञानिक प्रक्रिया =

3. मानववादी प्रक्रिया =

मानववाद और अनुशासन ⇒ मानवतावादी दर्शन आत्मानुशासन में विश्वास रखते हैं। आत्मानुशासन बालक को सच्चरित्र और आत्मानुशासित करता है। मानववादियों के अनुसार जब बालकों को प्रेम, दया, सहानुभूति, सहयोग, सद्भावना और त्याग आदि मानवीय गुणों की शिक्षा प्रदान की जाती है, तब स्वतः ही इनमें अनुशासन की भावना पैदा हो जाती है। मानववादी दमनात्मक अनुशासन के विरोधी हैं। इनका कहना है कि जहाँ दमन है वहाँ मानवता तो हो ही नहीं सकती इसलिए डरा-धमकाकर, धमकाकर, दण्ड देकर जो अनुशासन स्थापित किया जाता है वह अस्थायी होता है।

मानववाद और विद्यार्थी ⇒ 1. शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, सुन्दर तथा परिश्रमी होना चाहिए
2. विवेकपूर्ण व्यवहार के साथ-साथ उदात्त मानवीय भावनाओं से भरपूर हो।
3. उपलब्ध विषयों में सही विकल्प को चुनकर स्वतंत्र निर्णय ले सकने वाला हो।
4. अन्तर्मानवीय सम्बन्धों का निर्वाह करना तथा सामाजिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली में भाग ले
5. अन्य व्यक्तियों के साथ मिलजुलकर काम करने वाला हो तथा सामाजिक व नैतिक कार्यों में भाग लेता हो।

Scanned with CamScanner